मुकुट और प्रतिफल

फ्रैंकलीन के नोट्स

I. प्रस्तावना

उद्धार और **प्रतिफल** में बहुत भारी अन्तर है।

- **उद्धार परमेश्वर का दान है, न कि कर्मों का** (इफिसियों 2:8-9)
  उद्धार को यीशु मसीह के **पूरे किए गए कार्य** में **विश्वास के द्वारा** प्राप्त किया जाता है (यूहन्ना 3:36)।
  यह **उसके कार्य** पर आधारित है **न कि हमारे**।

- **प्रतिफल**, **विश्वासी** के **कार्य** अनुसार प्राप्त होता है। कार्य किसी भी रीति से मनुष्य को अनन्त जीवन के लिए योग्य **नहीं ठहराते**। मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा, और उस समय वह हर एक को **उसके कामों** के अनुसार **प्रतिफल** देगा। मत्ती 16:27

- आपकी अनन्त मंज़िल निर्भर करती है कि इस पृथ्वी पर आपने क्या **विश्वास** किया।
- आपका अनन्त भुगतान निर्भर करता है कि इस पृथ्वी पर आपका **आचरण** कैसा था।

यहाँ कुछ महत्वपूर्ण बुनयादी वचन हैं:

प्रकाशितवाक्य 11:15-18 और जब सातवें दूत ने तुरही फूंकी, तो स्वर्ग में इस विषय के बड़े बड़े शब्द होने लगे कि जगत का राज्य हमारे प्रभु का, और उसके मसीह का हो गया।(मैं इसके लिए और इस दिन को देखने के लिए प्रार्थना करता हूँ) और **वह युगानुयुग राज्य करेगा** ..और तेरा प्रकोप आ पड़ा और वह समय आ पहुंचा है, कि **मरे हुओं का न्याय किया जाए,** और **तेरे दास** भविष्यद्वक्ताओं और **पवित्र लोगों** को और उन छोटे बड़ों को जो तेरे नाम से डरते हैं, **प्रतिफल मिले** और पृथ्वी के बिगाड़नेवाले नाश किए जाएं।।

2 कुरिन्थियों 5:9-10 इस कारण हमारे मन की **उमंग** यह है, कि चाहे साथ रहें, चाहे अलग रहें पर हम **उसे भाते रहें**।[10] क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल **मसीह के न्याय आसन** के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने अपने भले बुरे **कामों** का **बदला** जो **उस ने देह के द्वारा किए** हों पाए।।

रोमियों 14:9-12 क्योंकि मसीह इसी लिये मरा और जी भी उठा कि **वह मरे हुओं और जीवतों, दोनों का प्रभु हो**। [10] तू अपने भाई पर क्यों दोष लगाता है? या तू फिर क्यों अपने भाई को तुच्छ जानता है? **हम सब के सब परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने खड़े होंगे**। [11] क्योंकि लिखा है, कि प्रभु कहता है, मेरे जीवन की सौगन्ध कि हर एक घुटना मेरे साम्हने टिकेगा, और हर एक जीभ परमेश्वर को अंगीकार करेगा। [12] सो **हम में से हर एक परमेश्वर को अपना अपना लेखा देगा**।।

प्रतिफल के बारे में स्पष्टता से बताने वाले वचन 1 कुरिन्थियों 3:8-15 में हैं : लगानेवाला और सींचनेवाला दानों एक हैं; परन्तु **हर एक व्यक्ति अपने ही परिश्रम के अनुसार अपना प्रतिफल पाएगा**। (9) क्योंकि हम परमेश्वर के **सहकर्मी** हैं; तुम

परमेश्वर की खेती और परमेश्वर की रचना हो। (10) परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार, जो मुझै दिया गया, मैंने बुद्धिमान राजमिस्त्री के समान नेव डाली, और दूसरा उस पर रद्दा रखता है; **परन्तु हर एक मनुष्य चौकस रहे, कि वह उस पर कैसा रद्दा रखता है।** (11) क्योंकि उस नेव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है कोई दूसरी नेव नहीं डाल सकता। (12) और यदि कोई इस नेव पर सोना या चान्दी या बहुमोल पत्थर या काठ या घास या फूस का **रद्दा रखता** है। (13) **तो हर एक का काम प्रगट हो जाएगा**; क्योंकि वह दिन उसे **बताएगा**; इसलिये कि आग के साथ प्रगट होगा: और वह आग **हर एक का काम परखेगी** कि कैसा है? (14) **जिस का काम** उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, **वह प्रतिफल पाएगा।** (15) और यदि किसी का काम जल जाएगा, तो **हानि उठाएगा; पर वह आप बच जाएगा** परन्तु जलते जलते।।

- प्रत्येक विश्वासी को उसके ही परिश्रम (पद 8) के अनुसार जो उसने राज्य में और राज्य के लिए "लगाए और सींचे", प्रतिफल दिया जाएगा ।

- प्रत्येक विश्वासी परमेश्वर के साथ सहकर्मी है (पद 9) ताकि उसके उद्देश्यों को पूरा करे। **उद्धार के लिए नहीं परन्तु प्रतिफल के लिए** ।

- विश्वासी को केवल नेव पर निर्माण करना है, जो यीशु मसीह है ।

- विश्वासी के पास दो तरह की निर्माण सामग्री का **विकल्प** है: सोना, चांदी या बहुमोल पत्थर - वे बहुत ही मूल्यवान है और सदा हमारे साथ हैं - अनन्तता की सामग्री। या फिर, काठ, घास, फूस - बहुत कम मुल्य की वस्तुएँ और जो शीघ्र समाप्त हो जाती है - अस्थायी सामग्री (पद 12)

  2 कुरीन्थियों 4:18 और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं, क्योंकि **देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन** की हैं, परन्तु **अनदेखी** वस्तुएं **सदा बनी रहती हैं।**

इस पृथ्वी पर आपके चुनाव का अनन्त काल में आपके जीवन पर सीधा प्रभाव डालेगा।

- इस पृथ्वी में जीवन, समयकाल पर एक बिन्दु के समान है। अनन्तकाल में जीवन की कभी समाप्ति नहीं >>>>>>>

हर एक मनुष्य चौकस रहे, कि वह नेव पर कैसा रद्दा रखता है (जैसा उसके वचन में निर्देश दिया गया है) और यह भी कि वह क्या बनाता है ।

हमारी इमारतें, व्यापार, व्यावसाय, आविष्कार और रचनाएँ सब की सब आखिर में जला दी जाएंगी और वे अनन्तता का मुल्य नहीं रखती।

जो परिश्रम अन्त तक रहने वाले, अनन्तता का मुल्य और प्रतिफल रखते हैं वो लोगों के आत्मिक जीवन और चरित्र हैं। यही तो हमें यीशु मसीह की नेव पर निर्माण करना है।

विश्वासी जो **नेव** - यीशु मसीह पर अनन्त सामग्री, सोना, चांदी या बहुमोल पत्थर से निर्माण करते हैं , **प्रतिफल प्राप्त करेंगे**। जो अस्थायी सामग्री, **काठ, घास, फूस** से निर्माण करते हैं, वे **प्रतिफल प्राप्त नहीं करेंगे।**

काठ, घास, फूस के कार्य "मसीह के न्याय आसन" (2 कुरिन्थियों 5:10) के समय नष्ट किए जाएंगे और विश्वासी हानि उठाएगा - **उद्धार की हानि नहीं, परन्तु उसके प्रतिफल की हानि**।

(15) और यदि किसी का काम जल जाएगा, तो **हानि उठाएगा; पर वह आप बच जाएगा** परन्तु जलते जलते।।

कुछ विश्वासी "मसीह के न्याय आसन" के समय लज्जित होंगे, अपने "काठ, घास, फूस" के कार्यों के कारण लज्जित होंगे।

1 यूहन्ना 2:28 निदान, हे बालको, उस में बने रहो; कि जब वह प्रगट हो, तो हमें हियाव हो, और हम उसके आने पर उसके सामने **लज्जित** न हों।

प्रकाशितवाक्य 3:11 मैं शीघ्र ही आनेवाला हूं; जो कुछ तेरे पास है, उस **थामें रह**, कि **कोई तेरा मुकुट छीन न ले।**

पवित्र शास्त्र में न्याय और प्रतिफल का अनेक स्थानों में उल्लेख मिलता है। हर एक मनुष्य अपने हृदय के अंतर्ज्ञान इसे जानता है।

भजन संहिता 58:11 तब मनुष्य कहने लगेंगे, **निश्चय धर्मी के लिये प्रतिफल है**; निश्चय परमेश्वर है, जो पृथ्वी पर **न्याय** करता है।।

II. इसके लिए प्रतिफल दिया जाएगा

1. **धार्मिकता का जीवन जीने के लिए** :

भजन संहिता 1 क्या ही धन्य है वह पुरूष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता, ...

मत्ती 5:11-12 धन्य हो तुम, जब लोग मेरे कारण तुम्हारी **निन्दा** करें, तुम्हें **यातना** दें और **झूठ बोल-बोल** कर तुम्हारे विरुद्ध सब प्रकार की **बातें** करें (12) आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है इसलिये कि उन्हों ने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहिले थे इसी रीति से सताया था।।

नीतिवचन 11:18 दुष्ट मिथ्या कमाई **कमाता** है, परन्तु जो **धार्मिकता** का बीज बोता, उसको निश्चय **प्रतिफल** मिलता है।

मत्ती 6:1 सावधान रहो! तुम मनुष्यों को दिखाने के लिये अपनी **धार्मिकता** के कार्य न करो, नहीं तो अपने स्वर्गीय पिता से कुछ भी **प्रतिफल न पाओगे**।

- परमेश्वर **हमारे उद्देश्यों** के प्रति चिन्तित है ,हम क्यों करते है, क्या करते है? हमें हर समय अपने आप से पूछना चाहिए, "मैं यह क्यों कर रहा हूँ? मैं किसे प्रसन्न करना चाहता हूँ ?"(गलातियों 1:10; 1 शमूएल 16:7)

इब्रानियो 11:23-27 विश्वास ही से मूसा ने सयाना होकर फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से **इनकार** किया।(25) इसलिये कि उसे पाप में थोड़े दिन के सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ **दुख भोगना और उत्तम लगा**। (26) और मसीह के कारण निन्दित होने को मिस्र के भण्डार से **बड़ा धन** समझा: क्योंकि **उस की आंखे प्रतिफल पाने की ओर लगी थीं**। (मत्ती 6:19-21)

सवाल है : सांसारिक खजाना या स्वर्गीय खजाना ?
कौन सा धन जिसे आप खोजना चाहते हैं आप की पसन्द को दर्शाता है?

2. **परमेश्वर के वचन का पालन करने** के लिए प्रतिफल दिया जाएगा:

भजन सहिंता 19:7-11 यहोवा की **व्यवस्था** खरी है, ...(8) यहोवा के **उपदेश** .... (9) यहोवा का **भय** ... यहोवा के **नियम** ..... (10) वे तो सोने से और बहुत कुन्दन से भी बढ़कर मनोहर हैं; वे मधु से और टपकनेवाले छत्ते से भी बढ़कर मधुर हैं। (11) और **उन्हीं से** तेरा दास **चिताया** जाता है; उनके पालन करने से **बड़ा ही प्रतिफल** मिलता है।

3. **दूसरों से वैसा ही व्यवहार करने पर जैसे उनके साथ यीशु करता:** प्रतिफल दिया जाएगा

लूका 6:35 वरन अपने शत्रुओं से प्रेम रखो, और भलाई करो: और फिर पाने की आस न रखकर उधार दो; और तुम्हारे लिये **बड़ा प्रतिफल** होगा; और तुम परमप्रधान के सन्तान ठहरोगे, क्योंकि वह उन पर जो धन्यवाद नहीं करते और बुरों पर भी कृपालु है।

- इस तरह जीने के लिए **परिपक्वता** 'पुत्रों ' की आवश्यकता है ।

नीतिवचन 25:21-22 यदि **तेरा बैरी** भूखा हो तो उसको रोटी खिलाना; और यदि वह प्यासा हो तो उसे पानी पिलाना; (22) क्योंकि इस रीति तू उसके सिर पर अंगारे डालेगा, और **यहोवा तुझे इसका प्रतिफल देगा**।

"जलते हुए अंगारों को सिर पर रखने" का अर्थ, इस संसार के मार्गों की बजाय जो सही है उसका "दृढ़ता" के साथ जीवित उदाहरण बनना।

मत्ती 6:2 इसलिये जब तू **दान** करे, तो अपने आगे तुरही न बजवा, जैसा कपटी, सभाओं और गलियों में करते हैं, ताकि लोग उन की बड़ाई करें, मैं तुम से सच कहता हूं, कि **वे अपना प्रतिफल पा चुके**।(4) ताकि तेरा दान गुप्त रहे; और तब **तेरा पिता** जो गुप्त में देखता है, **तुझे प्रतिफल देगा**।।

हमारे पास सदा यह **विकल्प** रहता है कि हमें **सांसारिक प्रतिफल** चाहिए या **स्वर्गीय**। यह निर्भर करता है कि हम **किसे** प्रसन्न करना चाहते है।

लूका 14:13-14 परन्तु जब तू भोज करे, तो कंगालों, टुण्डों, लंगड़ों और अन्धों को बुला। [14] **तब तू धन्य होगा**, क्योंकि उन के पास तुझे बदला देने को कुछ नहीं, परन्तु तुझे धर्मियों के **जी उठने पर इस का प्रतिफल मिलेगा**।

मत्ती 10:41-42 जो तुम्हें ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है। (41) जो भविष्यद्वक्ता को भविष्यद्वक्ता जानकर ग्रहण करे, वह भविष्यद्वक्ता का **प्रतिफल** पाएगा; और जो

धर्मी जानकर धर्मी को ग्रहण करे, वह धर्मी का **प्रतिफल** पाएगा।(42) जो कोई इन छोटों में से एक को चेला जानकर केवल एक कटोरा ठंडा पानी पिलाए, मैं तुम से सच कहता हूं, वह किसी रीति **से अपना प्रतिफल** न खोएगा।।

छोटे से छोटा भला कार्य और दूसरों के हित का सोचना, परमेश्वर हमसे चाहता है, हममें देखता है, सराहता है और उसका प्रतिफल भी देता है।

मरकुस 9:41 जो कोई एक कटोरा पानी तुम्हें इसलिये **पिलाए** कि तुम मसीह के हो तो मैं तुम से सच कहता हूं कि वह **अपना प्रतिफल** किसी रीति से न खोएगा।

इब्रानियो 10:34-37 क्योंकि तुम **कैदियों** के दुख में भी **दुखी हुए**, और अपनी **संपत्ति** भी **आनन्द** से **लुटने** दी; यह जानकर, कि तुम्हारे पास एक और भी उत्तम और सर्वदा ठहरनेवाली संपत्ति है।(35) सो अपना **हियाव** न छोड़ो क्योंकि उसका **प्रतिफल बड़ा** है।(36) क्योंकि तुम्हें **धीरज धरना** अवश्य है, ताकि **परमेश्वर की इच्छा को पूरी करके** तुम प्रतिज्ञा का फल पाओ।(37) क्योंकि अब बहुत ही थोड़ा समय रह गया है जब कि **आनेवाला आएगा**, और देर न करेगा।

4. उपवास और प्रार्थनाओं में विश्वासयोग्य बने रहने के लिए प्रतिफल दिए जाते है

मत्ती 6:6 परन्तु जब **तू प्रार्थना करे**, तो अपनी कोठरी में जा; और द्वार बन्द कर के अपने पिता से जो गुप्त में है प्रार्थना कर; और तब **तेरा पिता** जो गुप्त में देखता है, **तुझे प्रतिफल देगा**।

मत्ती 6:18 ताकि लोग नहीं परन्तु तेरा पिता जो गुप्त में है, **तुझे उपवासी जाने**; इस दशा में तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, **तुझे प्रतिफल देगा** ।

5. अपनी सेवकाई को आर्थिक लाभ के लिए न करने और उस में विश्वासयोग्य बने रहने के लिए : प्रतिफल दिए जाएंगे

1 कुरन्थियों 9:17-18 क्योंकि यदि **अपनी इच्छा** से यह करता हूं, तो **मुझे प्रतिफल** मिलता है, और यदि अपनी इच्छा से नहीं करता, तो **भण्डारीपन** मुझे सौंपा गया है।(18) सो मेरा **प्रतिफल** क्या है ? यह कि सुसमाचार सुनाने में मैं मसीह का सुसमाचार सेंत मेंत कर दूं; यहां तक कि सुसमाचार में जो मेरा अधिकार है, उस को मैं पूरी रीति से काम में लाऊं।

कुलुस्सियों 3:23-24 और जो कुछ तुम करते हो, **तन मन से करो**, यह समझकर कि मनुष्यों के लिये नहीं परन्तु प्रभु के लिये करते हो।(24) क्योंकि तुम जानते हो **कि तुम्हें इस के बदले प्रभु से प्रतिफल मिलेगा**: तुम प्रभु मसीह की सेवा करते हो।

मत्ती 24:44-47 परन्तु यह **जान लो** कि यदि घर का स्वामी जानता होता कि चोर किस पहर आएगा, तो जागता रहता; और अपने घर में सेंध लगने न देता।45 इसलिये **तुम भी तैयार रहो,** क्योंकि जिस घड़ी के विषय में

तुम सोचते भी नहीं हो, उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आ जाएगा।[46] सो वह **विश्वासयोग्य** और **बुद्धिमान दास** कौन है, जिसे **स्वामी ने अपने नौकर चाकरों पर अधिकारी ठहराया**, कि समय पर उन्हें भोजन दे?[47] धन्य है, वह दास, जिसे उसका स्वामी आकर **ऐसा की करते पाए**।

- हमें अब दूसरों के प्रति अपने सेवा कार्य में विश्वासयोग्य होना चाहिए तथा उन्हें उनकी ज़रूरतों की वस्तुएँ देनी चाहिए । क्योंकि उसके आने पर वर्तमान की हमारी विश्वासयोग्यता के आधार पर अनन्तकाल के लिए हमारी जिम्मेवारी और पद निर्धारित किया जाएगा।

- प्रकाशितवाक्य 5:10 और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिये एक राज्य और याजक बनाया; और **वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं।** (2तीमुथियुस 2:11-12 ; प्रकाशितवाक्य 11:15;20:6; 22:5)

  अनन्तकाल में राज करने का हमारा पद इस बात पर निर्धारित होगा कि हम अभी किस तरह से दूसरों की ज़रूरतों को पूरा करते हैं।

तोड़ों का दृष्टान्त हमें बताता है कि हम अपने को सौंपी गई वस्तुओं का जिस प्रकार से इस्तेमाल कर रहें हैं वह अनन्तकाल में हमारे प्रतिफल को निर्धारित करेगा।

हम उन बातों के साथ जो हमें सौंपी गई हैं कितने विश्वासयोग्य और परिश्रमी हैं।

मत्ती 25:14-15 क्योंकि यह उस मनुष्य की सी दशा है जिस ने परदेश को जाते समय अपने दासों को बुलाकर, **अपनी संपत्ति उन को सौंप दी**।[15] उस ने **एक को पांच** तोड़े, दूसरे को **दो**, और तीसरे को **एक**; अर्थात् **हर एक को उस की सामर्थ के अनुसार दिया**, और तब परदेश चला गया ...

- परमेश्वर ने हमें अपनी वस्तुएँ सौंपी और हमें छोड़ कर स्वर्ग लौट गया ।
- 1 कुरिन्थियों 4:7 और तेरे पास क्या है जो तू ने (दूसरे से) नहीं पाया?
- रोमियों 12:6 और जब कि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न भिन्न वरदान मिले हैं, तो **हम में से प्रत्येक अपने को दिए गए वरदानों का इस्तेमाल करे** ।
- 1 पतरस 4:10 जिस को **जो वरदान मिला है,** वह उसे परमेश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह के **भले भण्डारियों** की नाई **एक दूसरे की सेवा** में लगाए।

[19] बहुत दिनों के बाद उन दासों का स्वामी **आकर उन से लेखा लेने लगा**।

- प्रभु यीशु के लौटने के बाद हम उसके साथ राज करेंगे (प्रकाशितवाक्य 20:6) और हमारा पद इस बात के अनुसार होगा कि हम अपने को सौंपी गई जिम्मेवारियों और वरदानों के प्रति कितने विश्वासयोग्य रहे हैं।

[20] जिस को पांच तोड़े मिले थे, ... कहा; हे स्वामी, तू ने मुझे पांच तोड़े सौंपे थे, **देख मैं ने पांच तोड़े और कमाए हैं**।[21] उसके स्वामी ने उससे कहा, धन्य है अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में **विश्वासयोग्य** रहा; **मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा** अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो।

[22] और जिस को **दो** तोड़े मिले थे, उस ने भी आकर कहा; हे स्वामी तू ने मुझे दो तोड़े सौंपें थे, **देख, मैं ने दो तोड़े और कमाएं।**[23] उसके स्वामी ने उस से कहा, धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में **विश्वासयोग्य** रहा, **मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा** अपने स्वामी के आनन्द में सम्भागी हो।

लूका 19:11-27 जब वे ये बातें सुन रहे थे, तो उस ने एक दृष्टान्त कहा, इसलिये कि वह यरूशलेम के निकट था, और वे समझते थे, कि परमेश्वर का राज्य अभी प्रगट हुआ चाहता है।[12] सो उस ने कहा, एक धनी मनुष्य दूर देश को चला ताकि राजपद पाकर फिर आए।[13] और उस ने अपने दासों में से **दस** को बुलाकर उन्हें **दस मुहरें** दीं,

- प्रत्येक को तीन महीने की मज़दूरी दी गई। सब को वही धन राशि दी गई।

और उसने उन से कहा, मेरे लौट आने तक लेन- देन करना। [15] जब वह राजपद पाकर लौटा ..[16] तब पहिले ने आकर कहा, हे स्वामी तेरे मोहर से **दस और मोहरें कमाई** हैं।[17] उस ने उस से कहा; धन्य हे उत्तम दास, तुझे धन्य है, तू बहुत ही थोड़े में **विश्वासयोग्य निकला** अब **दस नगरों का अधिकार रख**।[18] दूसरे ने आकर कहा; हे स्वामी तेरी मोहर से **पांच और मोहरें कमाई** हैं।[19] उस ने कहा, कि तू भी **पांच नगरों पर हाकिम हो** जा।

प्रभु यहाँ दर्शाता है कि जब वह आएगा तब उसके साथ राज करने का हमारा पद इस बात पर निर्धारित करता है कि हम अपने को सौंपी गई वस्तु को कितना बढ़ाते हैं।

> मत्ती 19:27-30 इस पर पतरस ने उस से कहा, कि देख, हम तो सब कुछ छोड़ के तेरे पीछे हो लिये हैं: तो हमें क्या मिलेगा? (28) यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि नई उत्पत्ति से जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिहांसन पर बैठेगा, तो तुम भी जो मेरे पीछे हो लिये हो, **बारह सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करोगे**। (29) और **जिस किसी ने** घरों या भाइयों या बहिनों या पिता या माता या बच्चों या खेतों को मेरे नाम के लिये छोड़ दिया है, **उस को सौ गुना मिलेगा**: और वह अनन्त जीवन का अधिकारी होगा। (30) परन्तु बहुतेरे **जो पहिले हैं, अन्तिम होंगे**; और **जो अन्तिम हैं, पहिले होंगे**।।

- यह स्वर्ग में हमारे भविष्य के पद, अधिकार, कार्य और प्रतिफल के विषय में बात कर रहे है जो प्रभु और उसके प्रिय लोगों की सेवा करने के लिए हमारे अभी के त्याग के अनुसार हमें उस जीवन में दी जाएँगी ... **सौ गुना मिलेगा**

इन सब बातों को स्मरण रखते हुए यूहन्ना की हमारे लिए चेतावनी है :

> अपने विषय में **चौकस रहो**; कि जो परिश्रम हम ने किया है, उस को तुम **न बिगाड़ो**: वरन **उसका पूरा प्रतिफल पाओ**। 2 यूहन्ना 8

- **पूरा प्रतिफल** यह दर्शाता है कि प्रतिफल की मात्रा आपके द्वारा अभी किए गए कार्य के अनुसार छोटी या बड़ी होने पर निर्भर करती है।

हमारे उद्धारकर्ता और प्रभु की भी हमारे लिए हमें चेतावनी है :

> देख, **मैं शीघ्र आनेवाला हूं;** और **हर एक के काम के अनुसार** बदला देने के लिये **प्रतिफल** मेरे पास है।
> प्रकाशितवाक्य 22:12-13

पवित्रशास्त्र में स्पष्ट नहीं बताया गया कि यह प्रतिफल क्या है। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि बहुत सारे प्रतिफल हैं, कुछ इस पृथ्वी पर दिए जाते हैं और कुछ का स्वर्ग में हमारे **पद** और **जिम्मेवारियों** से लेना देना है।

सबसे विशेष प्रतिफल जो विश्वासियों को प्राप्त होगा, मुकुट हैं।

III. जीवन का मुकुट

याकूब 1:12 धन्य है वह मनुष्य, जो **परीक्षा में स्थिर रहता** है; क्योंकि वह खरा **निकलकर जीवन का वह मुकुट पाएगा**, जिस की प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करनेवालों को दी है।

परमेश्वर का पुत्र , यीशु मसीह मनुष्य बना और परीक्षा में स्थिर रहा, और उसे मनुष्यों के द्वारा काँटो का मुकुट दिया गया :

> यूहन्ना 19:1-5 इस पर पीलातुस ने **यीशु** को लेकर कोड़े लगवाए।(2) और सिपाहियों ने **कांटों का मुकुट** गूंथकर उसके सिर पर रखा, और उसे बैंजनी वस्त्र पहिनाया। .... (5) यीशु **कांटों का मुकुट** और बैंजनी वस्त्र **पहिने** हुए बाहर निकला और पीलातुस ने उन से कहा, देखो, यह पुरूष।

> परन्तु इसलिए कि वह स्थिर रहा और मृत्यु तक विश्वासयोग्य रहा, उसे अपने पिता के द्वारा सोने का मुकुट दिया गया :

> प्रकाशितवाक्य 14:14 और मैं ने दृष्टि की, और देखो, एक उजला बादल है, और उस बादल पर मनुष्य के पुत्र सरीखा कोई बैठा है, जिस के सिर पर **सोने का मुकुट** और हाथ में चोखा हंसुआ है।

यीशु ने हमारा “काँटो का मुकुट” और हमारे पाप पहिन लिए, ताकि वह हमें “जीवन का मुकुट” दे सके। यह जानते हुए : **मसीह का प्रेम** हमें विवश (बाध्य करता है या जकड़ लेता है) कर देता है; इसलिये कि हम यह समझते हैं, कि जब एक सब के लिये मरा तो सब मर गए।(15) और वह इस निमित्त सब के लिये मरा, कि जो जीवित हैं, वे आगे को अपने लिये न जीएं परन्तु **उसके लिये** जो उन के लिये मरा और फिर जी उठा। 2 कुरिन्थियों 5:13-15

विश्वासी को **परीक्षाओं पर जय प्राप्त करने** और **क्लेशों को सहने** की शक्ति प्रभु यीशु मसीह के **प्रेम** के द्वारा से मिलती है।

1 पतरस 1:3-9 हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद दो, जिस ने यीशु मसीह को मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा, अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिये **नया जन्म दिया**।(4) अर्थात् एक अविनाशी और निर्मल, और **अजर मीरास के लिये**। (5) जो तुम्हारे लिये स्वर्ग में रखी है, **जिन की रक्षा परमेश्वर की सामर्थ से, विश्वास के द्वारा** उस उद्धार के लिये, जो आनेवाले समय में प्रगट होनेवाली है, की जाती है। (6) और इस कारण तुम मगन होते हो, यद्यपि अवश्य है कि अब कुछ दिन तक **विभिन्न प्रकार की परीक्षाओं** के कारण उदास हो। (7) और **यह इसलिये है कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास**, जो आग से ताए हुए नाशमान सोने से भी कहीं, **अधिक बहुमूल्य** है, यीशु मसीह के प्रगट होने पर **प्रशंसा**, और **महिमा**, और **आदर** का कारण ठहरे। (8) उस से **तुम** बिन देखे **प्रेम रखते** हो, और अब तो उस पर बिन देखे भी **विश्वास करके** ऐसे **आनन्दित** और मगन होते हो, जो वर्णन से बाहर और महिमा से भरा हुआ है। (9) और अपने विश्वास का प्रतिफल अर्थात् आत्माओं का उद्धार प्राप्त करते हो।

मत्ती 5:11-12 धन्य हो तुम, जब लोग मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, तुम्हें यातना दें और झूठ बोल-बोल कर तुम्हारे विरुद्ध सब प्रकार की बातें करें। (12) आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में **बड़ा प्रतिफल** है

रोमियो 5:3-4 केवल यही नहीं, बरन हम क्लेशों (या दुःख भोग) में भी आनन्दित (या गर्व) हों, यही जानकर कि क्लेश से धीरज।(4) और धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है।(5) और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा **परमेश्वर का प्रेम** हमारे मन में डाला गया है।

विश्वासी के हृदय में **परमेश्वर का प्रेम** जितना **बड़ा** और जितना अधिक **जोशीला** होगा, उतना ही बड़ी परीक्षाओं पर वह विजय प्राप्त कर सकता है। अन्यथा वे परीक्षाएं उसे कठोर बना कर नाजुक स्थिति में ले आती है।

प्रकाशितवाक्य 2:10 जो दु:ख तुझ को झेलने होंगे, उन से मत डर : ..... तुम परखे जाओ; और तुम्हें ... क्लेश उठाना होगा: **प्राण देने तक विश्वासी रह; तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा।**

- यीशु स्वयं आपके सिर पर यह मुकुट रखेगा

एक विश्वासी को जीवन का मुकुट प्राप्त करने के लिए **परमेश्वर को अपने आप से भी ज्यादा प्रेम करना चाहिए।**

लूका 9:24 क्योंकि जो कोई अपना प्राण (अपने आप के लिए जीना) बचाना चाहेगा वह उसे खोएगा, परन्तु जो कोई मेरे लिए (मसीह के लिए हर हाल में जीना) अपना प्राण खोएगा वही उसे बचाएगा। जैसे जैसे परमेश्वर के प्रति हमारा प्रेम बढ़ेगा वैसे वैसे अपने आप के लिए हमारा प्रेम फीका पड़ जायेगा।

यह प्रतिफल उन्हें दिया जाएगा जो **परमेश्वर के प्रेम** से प्रेरित और सशक्त होकर **यीशु मसीह के लिए जीते है** और **परीक्षाओं को सहते है**।

1 कुरिन्थियों 10:13 तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है: **और परमेश्वर सच्चा है**: वह **तुम्हें सामर्थ से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा**, बरन परीक्षा के साथ **निकास भी करेगा**; कि तुम **सह सको**।।

मैं शीघ्र ही आनेवाला हूं; जो कुछ तेरे पास है, उस **थामें रह, कि कोई तेरा मुकुट छीन न ले**।
प्रकाशितवाक्य 3:11

IV. विजेता का मुकुट

विश्वासी की आत्मिक दौड़ को दर्शाने के लिए पौलुस यूनानी खेलों का उदाहरण लेता है ।1 कुरिन्थियों 9:24-27 क्या तुम नहीं जानते, कि दौड़ में तो **दौड़ते सब ही हैं**, परन्तु **इनाम एक ही ले जाता है**? तुम वैसे ही **दौड़ो**, कि **जीतो**।(25) और हर एक पहलवान **सब प्रकार का संयम** करता है, वे तो एक **मुरझानेवाले** मुकुट को पाने के लिये यह सब करते हैं, परन्तु हम तो उस मुकुट के लिये करते हैं, **जो मुरझाने का नहीं**।(26) इसलिये मैं तो इसी रीति से दौड़ता हूं, परन्तु लक्ष्यहीन नहीं, मैं भी इसी रीति से मुक्कों से लड़ता हूं, परन्तु उस की नाईं नहीं जो हवा पीटता हुआ लड़ता है। (27) परन्तु **मैं अपनी देह को मारता कूटता**, और **वश में लाता हूं**; ऐसा **न हो** कि औरों को प्रचार करके, **मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूं**।।

- **दौड़ में तो दौड़ते सब ही हैं**। खेलों में केवल यूनानी माँ - बाप से जन्मा, यूनानी नागरिक ही भाग ले सकता था। कोई भी बिना उद्धार प्राप्त किए प्रतिफल के लिए प्रभु की सेवा में भागीदार नहीं हो सकता; केवल “परमेश्वर से उत्पन्न” (1 यूहन्ना 5:1) ही इसके योग्य हैं।

- पौलुस के उदाहरण के अनुसार हर विश्वासी इस दौड़ मैं है, प्रश्न है : क्या हम दौड़ रहे हैं, या चल रहे हैं, या फिर बैठे-बैठे देख रहे हैं?

- वे “*एक मुरझानेवाले मुकुट को पाने के लिये यह सब करते हैं, परन्तु हम तो उस मुकुट के लिये करते हैं, जो मुरझाने का नहीं।*” हम अपने खेल में प्रतिस्पर्धा करने और जीतने के लिए कठिन परिश्रम करते हैं और दूसरे क्षेत्रों में भी ताकि अपनी दीवारों पर मेडल और इनामों को लटका सकें, जिसका वास्तव में थोड़ा और अल्पकालिक मुल्य होता है।

- जिस प्रकार एक खिलाड़ी को कई सुहावनी वस्तुओं का **अपने लिए त्याग** करना पड़ता है, वैसे ही विश्वासी को भी सब **प्रकार का संयम करना चाहिए और अपनी देह को मारना कूटना और वश में लाना चाहिए** नहीं तो वह **निकम्मा ठहरेगा**। वह **अपने उद्धार को नहीं खोएगा** परन्तु “विजेता का मुकुट” को खो देगा।

मैं शीघ्र ही आनेवाला हूं; जो कुछ तेरे पास है, उस **थामें रह**, कि **कोई तेरा मुकुट छीन न ले**।
प्रकाशितवाक्य 3:11

इब्रानियो 12:1-2 इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु, और उलझानेवाले पाप **को दूर करके, वह दौड़ जिस मे हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें**। (2) और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले **यीशु की ओर से ताकते रहें**; जिस ने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दहिने जा बैठा।

- यीशु ने, जो हमारा आदर्श है, भयंकर वेदनाएँ सह कर दौड़ जीती। हमे भी ऐसा ही करना चाहिए।

- विश्वासी को अपनी सामर्थ प्रभु में ढूंढनी चाहिए।

इफिसियों 6:10-18 निदान, प्रभु में और **उस की शक्ति में बलवन्त बनो**।(11) परमेश्वर के सारे हथियार **बान्ध लो**; कि तुम शैतान की युक्तियों के सामने **खड़े रह सको**।(12) क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।(13) इसलिये परमेश्वर के **सारे हथियार** बान्ध लो, कि तुम बुरे दिन में **सामना कर सको**, और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको।(14) सो सत्य से अपनी कमर कसकर, और **धार्मिकता** की झिलम पहिन कर।(15) और पांवों में मेल के **सुसमाचार** की तैयारी के जूते पहिन कर।(16) और उन सब के साथ **विश्वास** की ढाल लेकर स्थिर रहो जिस से तुम उस दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको।(17) और **उद्धार** का टोप, और आत्मा की तलवार जो **परमेश्वर का वचन है**, ले लो।(18) और हर समय और हर प्रकार से आत्मा में **प्रार्थना**, और विनती करते रहो, और इस लिए **जागते रहो,** कि सब पवित्र लोगों के लिए लगातार विनती किया करो।

- विश्वासी को प्रभु की दौड़ में और संसार की दौड़ में एक साथ नहीं दौड़ना चाहिए। आप दो स्वामियों को प्रसन्न नहीं कर सकते। (मत्ती 6:24)।
  रोमियों 12:1-2 इसलिये हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूं, कि **अपने शरीरो कों** जीवित, और **पवित्र**, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके **चढ़ाओ**: यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।(2) और **इस संसार के सदृश न बनो**; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल- चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।।

- विश्वासी को विश्वास के द्वारा हर उस चीज़ को **इनकार** करना चाहिए जो उसकी आत्मिक उन्नति में बाधा हो। इब्रानियों 11:24-27 **विश्वास** ही से मूसा ने सयाना होकर फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से **इनकार किया**।(25) इसलिये कि उसे पाप में थोड़े दिन के सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ दुख भोगना और **उत्तम लगा**। (26) और मसीह के कारण निन्दित होने को मिस्र के भण्डार से **बड़ा धन** समझा: **क्योंकि उस की आंखे फल पाने की ओर लगी थीं**। (27) विश्वास ही से राजा के क्रोध से न डरकर उस ने मिस्र को छोड़ दिया, **क्योंकि वह अनदेखे को मानों देखता हुआ दृढ़ रहा**।

बाहर दर्शक बन कर ना देखे, अनंतकाल के विजेता मुकुट को जीतने के लिए दौड़े।

1 यूहन्ना 2:28 निदान, हे बालको, उस में बने रहो; कि जब वह प्रगट हो, तो हमें हियाव हो, और हम उसके आने पर **उसके सामने लज्जित न हों**।

मैं शीघ्र ही आनेवाला हूं; जो कुछ तेरे पास है, उस **थामें रह**, कि **कोई तेरा मुकुट छीन न ले।** प्रकाशितवाक्य 3:11

V. उल्लास का मुकुट

1 थिस्सलुनीकियों 2:19-20 भला हमारी आशा, या आनन्द या **उल्लास का मुकुट** कौन है? क्या हमारे प्रभु यीशु के सम्मुख उसके आने के समय **तुम ही** न **होगे**?(20) हमारी बड़ाई और आनन्द तुम ही हो।।

उल्लास का मुकुट लोगों को प्रभु यीशु मसीह के लिए जीतने के लिए है। प्रभु के लिए जो सबसे बड़ा काम करने का आपको सौभाग्य मिला है वह है, “मेमने के दुःख सहने का प्रतिफल उसके लिए इकठ्ठा करना”।

स्वर्ग में हमारा आनन्द का भाग उन लोगों से निर्धारित होगा जिनकी आप ने मसीह की ओर आने में सहायता की है।

पौलुस थिस्सलुनीकियों के विश्वासियों को बताता है कि वे अब, और जब यीशु आएगा, उसकी आशा, या आनन्द या उल्लास का मुकुट हैं।

- आनन्द का मुकुट
- जिस मुकुट में हम सब महिमा पाएँगे
- जो हमारा गर्वित प्रतिफल और मुकुट है

हमारे इस पृथ्वी पर होने का कारण यीशु के लिए लोगों को लाना है।

प्रेरितों के काम 1:8 परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक **मेरे गवाह** होगे।

मत्ती 28:19-20 इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को **चेला बनाओ** और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।(20) और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।।

- मसीह के लिए लोगों को जीतना बुद्धिमानी है। नीतिवचन 11:30 धर्मी का प्रतिफल जीवन का वृक्ष होता है, और बुद्धिमान मनुष्य लोगों के मन को जीत लेता है।

- मसीह के लिए लोगों को जीतना पाप के विरुद्ध काम करना है। याकूब 5:20 तो वह यह जान ले, कि जो कोई किसी भटके हुए पापी को फेर लाएगा, वह एक प्राण को मृत्यु से बचाएगा, और अनेक पापों पर परदा डालेगा।।

- उसकी भेड़ों को उसके पास लाना स्वर्ग में आनन्द का कारण है। लूका 15:10 मैं तुम से कहता हूं; कि इसी रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने आनन्द होता है।।

- उसका धन उसके पास लाने में अनन्त लाभ है ।
  मत्ती 6:19-20 अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो; जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं।(20) परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा, और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं।

- अपने जीवन से गवाही दें - ऐसे जिएँ कि लोग यीशु को आप में देख सकें।
  1 कुरिन्थियों 9:19:23 क्योंकि सब से स्वतंत्र होने पर भी मैं ने अपने आप को सब का दास बना दिया है; कि अधिक लोगों को खींच लाऊं ...... मैं सब मनुष्यों के लिये सब कुछ बना हूं, कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊं। (23) और मैं सब कुछ सुसमाचार के लिये करता हूं, कि औरों के साथ उसका भागी हो जाऊं।
  गलतियों 2:20 मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है

- अपने शब्दों से गवाही दें - पवित्र आत्मा पर भरोसा रखें कि आपको क्या कहना है वह बताएगा।
  लूका 12:11-12 जब लोग तुम्हें सभाओं और हाकिमों और अधिकारियों के साम्हने ले जाएं, तो चिन्ता न करना कि हम किस रीति से या क्या उत्तर दें, या क्या कहें। (12) क्योंकि पवित्र आत्मा उसी घड़ी तुम्हें सिखा देगा, कि क्या कहना चाहिए।।
  लूका 21:15 क्योंकि मैं तुम्हें ऐसा बोल और बुद्धि दूंगा, कि तुम्हारे सब विरोधी साम्हना या खण्डन न कर सकेंगे।

- परमेश्वर ने जो कुछ भी दिया है उससे सुसमाचार प्रचारकों की सहायता करने के द्वारा अच्छे भण्डारी बनें।
  लूका 12:42 प्रभु ने कहा; वह विश्वासयोग्य और बुद्धिमान भण्डारी कौन है, जिस का स्वामी उसे नौकर चाकरों पर सरदार ठहराए कि उन्हें समय पर भोजन-सामग्री दे।

  फिलिप्पियों 4:15-17 और हे फिलिप्पियों, तुम आप भी जानते हो, कि सुसमाचार प्रचार के आरम्भ में .... तुम्हें छोड़ और किसी मण्डली ने लेने देने के विषय में मेरी सहयता नहीं की।(16) इसी प्रकार जब मैं थिस्सलुनीके

में था; तब भी तुम ने मेरी घटी पूरी करने के लिये एक बार क्या बरन दो बार कुछ भेजा था।(17) यह नहीं कि मैं दान चाहता हूं परन्तु **मैं ऐसा फल चाहता हूं, जो तुम्हारे लाभ के लिये बढ़ता जाए।**

2 कुरिन्थियों 9:6-9 परन्तु बात तो यह है, कि जो थोड़ा बोता है वह थोड़ा काटेगा भी; और जो बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा।(7) हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे; न कुढ़ कुढ़ के, और न दबाव से, क्योंकि **परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम रखता है**।(8) और परमेश्वर सच प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है जिस से हर बात में और हर समय, सब कुछ, जो तुम्हें आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे, और **हर एक भले काम के लिये तुम्हारे पास बहुत कुछ हो।**

- परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है कि प्रभु में तुम्हारा परिश्रम व्यर्थ नहीं है। 1 कुरिन्थियों 15:58 सो हे मेरे प्रिय भाइयो, दृढ़ और अटल रहो, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ, क्योंकि यह जानते हो, कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है।।

- वह व्यक्ति जो दूसरों को मसीह की ओर लाता है अकेला आनन्दित नहीं होता - जब उसे “उल्लास का मुकुट” प्राप्त होता है तब सारा स्वर्ग उसके साथ आनन्दित होता है। यूहन्ना 4:36 और काटनेवाला मजदूरी पाता, और अनन्त जीवन के लिये फल बटोरता है; ताकि बोनेवाला और काटनेवाला **दोनों मिलकर आनन्द करें।**

1 यूहन्ना 2:28 निदान, हे बालको, उस में बने रहो; कि जब वह प्रगट हो, तो **हमें हियाव हो**, और हम उसके आने पर उसके सामने लज्जित न हों।

प्रकाशितवाक्य 3:11 मैं शीघ्र ही आनेवाला हूं; जो कुछ तेरे पास है, उस **थामें रह**, कि **कोई तेरा मुकुट छीन न ले**।

VI. धार्मिकता का मुकुट

2 तीमुथियुस 4:5-8 पर तू सब बातों में **सावधान रह, दुख उठा, सुसमाचार प्रचार** का काम कर और **अपनी सेवा** को पूरा कर। (6) क्योंकि अब मैं अर्घ की समान उंडेला जाता हूं, और मेरे कूच का समय आ पहुंचा है।(7) **मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं मैं ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है,** मैं ने विश्वास की रखवाली की है।(8) भविष्य में मेरे लिये **धार्मिकता का वह मुकुट** रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी, और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा और मुझे ही नहीं, वरन उन सब को भी, **जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं।**।

धार्मिकता का मुकुट एक प्रतिफल है, और इसे “परमेश्वर की धार्मिकता” के साथ न मिला दें, जो सभी विश्वास करने वालों को दिया जाने वाला एक वरदान है ।

धार्मिकता का मुकुट विश्वासी द्वारा **अर्जित** किया जाने वाला एक प्रतिफल है। यदि विश्वासी मसीह के दूसरे आगमन को प्रिय जानता है, उसकी खोज करता है और बाट जोहता है, तो यह उसके जीवन, उसके रहन सहन को प्रभावित करेगा और "उसकी सेवकाई को पूर्ण" करेगा।

मत्ती 24:14 और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, **तब अन्त आ जाएगा।।**

इस सच्चाई ने पौलुस के जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव डाला और इसी कारण वह कह सका:

- मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं : अपने सम्पूर्ण मसीही जीवन में उसने यीशु मसीह पर केन्द्रित हो कर आत्मिक युद्ध लड़ा और अपनी सेवकाई पूर्ण की। **प्रभु यीशु मसीह** के प्रति उसके सशक्त **प्रेम** के कारण उसने कभी धार्मिकता के शत्रुओं के सामने हथियार नहीं डाले।

- मैं ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है: उसके पास अनुसरण करने का एक मार्ग था, एक बुलाहट थी और पूरा करने के लिए मिशन। वह कठिन स्थानों से वापस मुड़ा नहीं; और न ही उसने पीछे मुड़ कर देखा । उसने मसीह की ओर ताकते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त किया।

  इब्रानियों 12: 2-3 (2) और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर से ताकते रहें; जिस ने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दहिने जा बैठा।(3) इसलिये उस पर ध्यान करो, जिस ने अपने विरोध में पापियों का इतना वाद-विवाद सह लिया कि तुम निराश होकर हियाव न छोड़ दो।

- मैं ने विश्वास की रखवाली की है। उसने परमेश्वर की सम्पूर्णता का प्रचार किया, और पवित्र आत्मा द्वारा दिए गए सत्य से वह कभी अलग नहीं हुआ।

  प्रेरितों के काम 20:24 परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता: कि उसे प्रिय जानूं, बरन यह कि मैं **अपनी दौड़** को, और **उस सेवाकाई को पूरी करूं**, जो मैं ने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने के लिये प्रभु यीशु से पाई है .... (27) क्योंकि मैं परमेश्वर की सारी मनसा को तुम्हें पूरी रीति से बनाने से न झिझका।

  प्रेरित मसीह के न्याय आसन की ओर देख रहा था जहाँ उन लोगों को धार्मिकता का मुकुट दिया जाएगा जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं।

  यदि **वास्तव** में हम **प्रभु यीशु मसीह** से **प्रेम** करते हैं और उसके साथ रहने एवं पृथ्वी पर धार्मिकता के राज को देखने की बहुत इच्छा रखते हैं, तो हम सच्चे मन से प्रार्थना करेंगे : "*हे प्रभु यीशु आ, तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है पृथ्वी पर भी हो।*"तथा यह **हमारी प्राथमिकताओं और जीवन के रहन-सहन के तरीकों को बदल डालेगा।**

विश्वासी के लिए यह कितना आवश्यक है कि वह अपने प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के दूसरे आगमन की हृदय से चाह रखे, ताकि वह **धार्मिकता के मुकुट** को प्राप्त कर सके।

1 यूहन्ना 2:28 निदान, हे बालको, उस में बने रहो; कि जब वह प्रगट हो, तो हमें हियाव हो, और हम उसके आने पर उसके सामने लज्जित न हों।

प्रकाशितवाक्य 3:11 **मैं शीघ्र ही आनेवाला हूं; जो कुछ तेरे पास है, उस थामें रह, कि कोई तेरा मुकुट छीन न ले।**

VII. महिमा का मुकुट

1 पतरस 5:1-4 तुम में जो **प्राचीन** हैं, मैं उन की नाईं प्राचीन और मसीह के दुखों का गवाह और प्रगट होनेवाली महिमा में सहभागी होकर उन्हें यह समझाता हूं।(2) कि परमेश्वर के उस झुंड की, जो तुम्हारे बीच में हैं **रखवाली करो**; और यह दबाव से नहीं, परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच- कमाई के लिये नहीं, पर मन लगा कर।(3) और जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ, वरन झुंड के लिये आदर्श बनो।(4) और जब प्रधान रखवाला प्रगट होगा, तो तुम्हें **महिमा का मुकुट** दिया जाएगा, जो मुरझाने का नहीं।

महिमा का मुकुट विश्वासयोग्य और आज्ञाकारी रखवालों के लिए प्रतिफल है जिन्हें परमेश्वर ने अपने लोगों की अगुवाई करने और उन्हें सिखाने के लिए ठहराया है। वह इस प्रतिफल को उस समय प्राप्त करेंगे जब प्रधान रखवाला प्रगट होगा। यह अनंतकाल का होगा; जो मुरझाएगा नहीं।

वे इस महिमा के मुकुट को इस प्रकार प्राप्त करेंगे:

- परमेश्वर के झुण्ड का पोषण करने के द्वारा। उन्हें परमेश्वर के वचन की घोषणा बिना डर या भेद-भाव के करनी है; और यदि आवश्यक हो तो सब प्रकार की सहनशीलता, और शिक्षा के साथ उलाहना दे, और डांट, और समझा। (2 तीमुथियुस 4:2-5)

- कलीसिया की आत्मिक देखभाल करने के द्वारा। वे परमेश्वर के लोगों को दिए गए सन्देश प्रचार के लिए परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी हैं। किसी भी पास्टर को लोगों को प्रसन्न करने के लिए प्रचार नहीं करना चाहिए; उसे प्रभु को प्रसन्न करना चाहिए। अब मैं क्या मनुष्यों को मानता हूं या परमेश्वर को? क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करना चाहता हूं? यदि मैं अब तक मनुष्यों को प्रसन्न करता रहता, तो मसीह का दास न होता।। गलातियों 1:10

- कलीसिया का आदर्श बनने के द्वारा। उनको धन के प्रतिफल के लिए सेवा नहीं करनी। फिर भी, पास्टर की और उसकी आवश्यकताओं की देख भाल करने की ज़िम्मेवारी कलीसिया की है। उसे आत्मिक अगुवा होना चाहिए, निरंकुश नहीं। 1 तीमुथियुस 5:18 पवित्र शास्त्र कहता है, कि दांवनेवाले बैल का मुंह न बान्धना, क्योंकि मजदूर अपनी मजदूरी का हक्कदार है।

1 यूहन्ना 2:28 **निदान, हे बालको, उस में बने रहो; कि जब वह प्रगट हो, तो हमें हियाव हो, और हम उसके आने पर उसके साम्हने लज्जित न हों।**

लूका 17:10 इसी रीति से तुम भी, जब उन सब कामों को कर चुको जिस की आज्ञा तुम्हें दी गई थी, तो कहा, हम निकम्मे दास हैं; कि जो हमें करना चाहिए था वही किया है।।

प्रकाशितवाक्य 3:11

मैं शीघ्र ही आनेवाला हूं; जो कुछ तेरे पास है, उस थामें रह, कि कोई तेरा मुकुट छीन न ले।